

दिव्याशीष

प. पू. आचार्य श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. * प. पू. आचार्य श्रीमद्विजय धनचंद्रसूरीश्वरजी म.सा.
प. पू. आचार्य श्रीमद्विजय भूपेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. * प. पू. आचार्य श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.
प. पू. आचार्य श्रीमद्विजय विद्याचंद्रसूरीश्वरजी म.सा. * प. पू. आचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

जीवन यात्रा

प. पू. आचार्य श्रीमद्विजय
जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.



समता, सरलता, सादगी, समयज्ञता आदि अनेकानेक सद्गुणों के सौरभ से सुवासित-सुशोभित पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. का अवतरण गुजरात राज्य के, बनावसकांडा जिले के थराद के समीपस्थ पेपराल गाँव में श्रीधिवर्य स्वरूपचंद्रजी धरु के घर आँगन में रत्नकुशिणी श्रीमती पार्वतीबाई की कुक्षी से वि.सं. १९९३ मगसर वदि १३ (गुजराती तिथि कार्तिक वदि १३) के शुभ दिन हुआ। आपश्री का नाम पूनमचंद रखा गया। बाल्यकाल से ही आपश्री को परिवार में धर्ममय वातावरण मिला। जीवन के पायदान चढ़ते हुए आपकी देव-गुरु-धर्म के प्रति गहरी आस्था और श्रद्धा निरन्तर बढ़ती गई। उस समय पेपराल में जिनालय नहीं था, इसलिए आप यहां से २ कि.मी. दूर जेतडा गाँव में नित्य पूजन-दर्शन करने जाते थे। आपका परिवार कुछ समय पश्चात् पेपराल से थराद में आकर रहने लगा। यहाँ आपकी विद्यालयी एवं धार्मिक शिक्षा हुई।

वि.सं. २००४/२००५ में प.पू. व्याख्याना वाचस्पति श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. का चातुर्मास थराद में हुआ। इस चातुर्मास ने पूनमचंद के परिवर्तन में अहम् भूमिका निभाई और आपश्री का मन वैराग्यवासित बन गया। आपश्री परिवार की अनुमति से गुरुकुलवासी बन धार्मिक अध्ययन करते रहे। पुण्ययोग से राजस्थान के सियाणा गाँव में वि.सं. २०१० महा सुदि ४ को पूनमचंद प्रवज्या ब्रह्म कर मुनि जयन्तविजय बने। संयम अंगीकार करने के पश्चात् गुरु की चरण-शरण में पूर्ण समर्पणता के साथ संयम साधना, श्रुत साधना में लीन बन गये। आपश्री की योग्यता, गंभीरता, शासननिष्ठा को दृष्टि में रखकर गुरुदेवश्री ने अपने मुख से आपको 'उपाचार्य' उद्घोषित किया। वि.सं. २०१७ में गुरुवियोग के पश्चात् आपश्री ने निरंतर तीन वर्ष अहमदाबाद में प्रबुद्ध पंडीतवर्यो से विद्याध्ययन किया। कर्तव्यपालन के रूप में आपकी विचरणयात्रा प्रारंभ हुई। अनेकविध शासन प्रभावना के कार्य आपकी निष्ठा में होते गये। समग्र ख्रिस्तुतिक श्रीसंघ की उपस्थिति में भांडवपुर तीर्थ में वि.सं. २०४० महा सुदि १३ के दिन आप 'आचार्यपद' पर आसीन होकर ख्रिस्तुतिक समुदाय के संघनायक बने। तत्पश्चात् मान्य अजोड शासन प्रभावना का अनवरत क्रम चलता रहा। हर क्षेत्र में आपका विशिष्ट मार्गदर्शन एवं प्रेरणा प्राप्त होती रही। स्वयं की संयम साधना में रत रहकर आप शासन उत्कर्ष के कार्य संभालने में सक्षम रहे।

» तीर्थ प्रभावक के रूप में आपकी सद्प्रेरणा से प्राचीन तीर्थों का जीर्णोद्धार एवं अनेक नूतन तीर्थों के निर्माण हुए।

- » साहित्य-मनीषी के रूप में आपके द्वारा २५० से अधिक पुस्तकों का आलेखन, प्रकाशन, संपादन, संकलन हुआ। लगभग ३००० जितनी काव्य रचनाएँ हुई।
- » संघ एकता शिल्पी के रूप में अनेक श्रीसंघों में वर्षों से चल रहे विवादों का सुखद समाधान हुआ।
- » प्रतिष्ठाशिरोगणि के रूप में ३०० से अधिक जिनालयों एवं गुरुमंदिरों की प्रतिष्ठा करवाई गयी एवं साथ ही २००० से अधिक प्रतिमाओं की अंजनशलाका भी करवाई गयी।
- » आत्मोद्धारक के रूप में आपश्री ने १९२ आत्माओं को रजोहरण प्रदान कर दीक्षित किया।
- » राष्ट्रसंत/लोकसंत के रूप में आपकी सद्प्रेरणा से अनेक स्थानों में अस्पताल, गौशाला, विद्यालय आदि का निर्माण हुआ एवं साथ ही कुदरती आपदाओं के समय में अनेक बार सेवा प्रवृत्तियों करवाई गई।
- » अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद परिवार को आपका पूर्ण आशीर्वाद-मार्गदर्शन ६० वर्षों तक अनवरत मिलता रहा एवं साथ ही शाश्वत-धर्म मासिक पत्रिका आपके आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर रही।
- » भारतभर में १४ प्रांतों में १ लाख से अधिक कि.मी. का विहार करके जिनशासन एवं गुरु गच्छ की महिमा में खूब अभिवृद्धि की।
- » आपने मध्यपदेश में २४, दक्षिण भारत में १२, राजस्थान में १२, शेष गुजरात, महाराष्ट्र आदि प्रांतों में कुल ६३ चार्तुमास किये।

८१ वर्ष की उम्र तक अप्रमत्तभाव से अकल्पनीय शासन प्रभावना करते हुए आपका वि.सं. २०७३ में वैशाख वदि ५ की रात्रि को भांडवपुर तीर्थ में समाधिपूर्वक देवलोकगमन हुआ। वैशाख वदि ७ को अंतिम संस्कार के साथ श्रीसंघ को आपका देहवियोग हुआ।

अखंड ऊर्जा के रूप में आप हमेशा जीवंत हो। देवलोकगमन पश्चात् श्रद्धांजलि सभा में सकल श्रीसंघ द्वारा 'पुण्यसम्राट्' पद पर उद्घोषित किया गया।

